श्री जी गोसदन
नोएडा

गो संदेश

वर्ष : 13 • अंक : 2 • मई, 2025

सम्पादकीय

आदरणीय बन्धुवर,

सादर अभिवादन।

आशा है आप सानन्द होंगे। ज्येष्ठ मास की दोपहरी तो आजकल गायब ही है। नवतपा जो 25 मई से प्रारम्भ होना था उसका भी कोई प्रभाव नहीं दिख रहा है। वैसे तो लू व गर्मी से राहत है पर मौसम का जो चक्र होना चाहिये था वह बिगड़ गया है। इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ही। यह सब पारिस्थिकि व पर्यावरण के बिगड़ने के कारण है।

इस सबका कारण है प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन। हमने अपने सुख वृद्धि के लिए प्रकृति से खिलवाड़ की हुई है। पुराणों में हमने पढ़ा है कि पृथ्वी ने अपने प्राकट्य माध्यम के रूप में गाय माता को ही चुना। अतः गाय के संरक्षण व संबर्धन से भी काफी हद तक पर्यावरण संतुलन किया जा सकता है। इसीलिये हमारे पुरखों ने गाय के संबर्धन व संरक्षण पर बहुत जोर दिया। गाय को भगवान की भी भगवान माना। इस संबंध को गो व गोपाल के बीच स्थापित किया।

मैं लगातार एक बात के लिए आग्रह करता आ रहा हूँ कि गाय का अंतिम घर किसान परिवार है। किसान अगर बचेगा समृद्ध होगा तो गाय बचेगी। 28 मई को कैबिनेट बैठक में भारत सरकार ने खरीफ की अनेक फसलों के लिए एमएसपी की घोषणा की है। सरकार का प्रयास है कि किसान को लागत से 50 प्रतिशत अधिक फसल के दाम मिले, साथ ही साथ गेहूँ, चावल व गन्ना की फसल के अलावा किसान दलहनी व तिलहनी फसलों की ओर उद्धत हो यह भी सरकार चाहती है ताकि भारत अपने आत्मनिर्भरता के लक्ष्य की ओर बढ़े। हमारा देश अनेक विविधताओं से युक्त देश है। हर तरह की जलवायु, हर तरह की मिट्टी व अनेक मिनिरल्स यहाँ पर हैं। 140 करोड़ देशवासियों के रूप में बहुत बड़ी मानव सम्पदा भी हमारे पास है। सिंदूर ऑपरेशन ने भारतीय मस्तिष्क की उत्कृष्टता को प्रमाणित कर दिया है। केवल 4 दिन के ऑपरेशन ने हमारी रक्षा सामग्री की गुणवत्ता को विश्व की

शेष पृष्ठ 2 पर...

अध्यक्ष की कलम से

परम स्नेही मित्रगण,

सादर नमन वन्दन एवं अभिनन्दन!

मैं समस्त श्री जी गोसदन परिवार की ओर से आप सभी स्वजनों की समृद्धि खुशहाल जीवन की ईश्वर व गौमाता से कामना करता हूँ व आप सभी परिवाजनों का जीवन सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्नचित रहे।

मित्रों 4 मई, 2025 का हवन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। हवन में लगभग 400 लोग उपस्थित रहे। गौमाता का आशीर्वाद लिया एवं प्रसाद ग्रहण किया।

सम्मानित गोप्रमियों आपको बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि खुले मैदान में खडंजा लगा दिया गया है। गौमाता के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त रहेंगे। इसी के साथ इस मैदान में दो तरह खोरों के ऊपर सेड बन चुके हैं और अब श्री प्रदीप गुप्ता जी के सौजन्य से तीसरी तरफ सेड डालने का कार्य शुरू हो गया है।

इसी कड़ी में छोटे बच्चों एवं साड़ों (नन्दी) को धूप से बचाने के लिए अतिरिक्त सेड लगाने का काम जारी है।

प्रिय बन्धुओ नवनिर्मित भारत भवन अब पूरी तरीके से तैयार है। एयर कन्डीशन, साउन्ड सिस्टम, मॉडल शौचालय उपलब्ध हैं आप सभी लोग इस भवन में किसी भी धार्मिक संस्कृति एवं व्यक्तिगत उत्सव को सात्विक तरीके से मनाने के लिए सादर आमन्त्रित है।

साथियों ऑफिस के नये फर्नीचर एवं लैब रूम, डॉ. रूम बनाने के लिए श्री अखिलेश भदौरिया जी को बहुत–बहुत साधुवाद।

साथियों पर्यावरण की कड़ी में इस महीने वृक्षारोपण का कार्यक्रम भारत विकास परिषद् (स्वर्णिम) नोएडा के सौजन्य से किया गया।

साथियों आप से सहयोग की कड़ी में गौमाता के लिए भूसा व हरा चारा श्री सत्य नारायण गोयल जी, श्री सुशील गोयल जी, श्री वृजेन्द्र गर्ग परिवार एवं श्री सुधीर अवस्थी जी ने अपना सहयोग दिया।

शेष पृष्ठ 2 पर...

मासिक हवन

दिनांक : रविवार, 1 जून, 2025 • समय : प्रातः 9.00 बजे • स्थान : गोशाला प्रांगण

यजमान : श्री मूलचंद कंसल जी; श्री मधुसूदन दादू जी; श्री गोपाल अग्रवाल जी; श्री जे एम गुप्ता जी; श्री पी एल कपूर जी; श्री ए पी वर्मा जी; श्री सुशील सिंघल जी।

गो सेवा से ही सुख की प्राप्ति

– जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीश्यामनारायणाचार्य जी

आज देश दुःखी है– प्रजा दुःखी है तथा संत–महात्मा सहित सारा चराचर जगत् दुःखी है। इसका एकमात्र कारण है गोमाता का दुःखी होना। जब से भारत एवं अन्यान्य देशों में गोवध होने लगा है, तब से समस्त विश्व की प्रजा–जीव–जन्तु दुःखी रहने लगे हैं। राजा का धर्म होता है प्रजा की रक्षा करना, परंतु आज का शासक प्रजा को दुःखी देखकर चुप लगाकर बैठ जाता है, क्योंकि शासक में स्वयं देश के प्रति निष्ठा, सद्भावना एवं समझदारी नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये। गोमाता की सेवा करना तो अलग की बात है।

गोसेवा की शिक्षा स्वयं श्रीरामजी अयोध्यावासियों को देते हुए कहते हैं– 'मैं इस रामावतार में 'गोसेवा' नहीं कर सका। लोगों ने मुझे महाराज श्री दशरथ जी का पुत्र समझकर गोसेवा नहीं करने दिया, इसलिये मैं गोसेवा के लिये ही अगला कृष्णावतार धारण करूँगा।' आगे भगवान् श्रीकृष्ण की लीला में सबसे अधिक गोसेवा का ही वर्णन किया गया है। लाखों संत–महात्माओं ने गोरक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी, परंतु आज तक 'गोवध' बंद नहीं हो सका। लोग कहते हैं – मुसलमान बहुत बुरे हैं। गायों का वध करते हैं, परंतु मुसलमानों से कहीं अधिक आज देश का अधिकतर हिन्दू दोषी है। अपने घर के माता–पिता जब वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाते हैं, तब उनको घर से बाहर कर देते हैं क्या? भले हों, बुरे हों, कैसे भी हों, परंतु माता–पिता की सेवा करनी ही पड़ेगी। आज प्रायः हर जगह यही हो रहा है। किसी ने पाँच हजार की गौ खरीदी, और दो साल बाद दूध कम देने के कारण उसने गोमाता को तीन हजार में ही बेच दिया। उसी गाय को दूसरे साल दूसरे सज्जन ने दो हजार में बेच दिया। इसी प्रकार धीरे–धीरे वह गोमाता ज्यों–ज्यों जीर्ण होती गयी, त्यों–त्यों उसे कम दामों में बेचते हुए एक दिन कसाई के हाथों बेचकर वध का शिकार बना दिया। आज देश का प्रत्येक हिन्दू अपने–अपने घरों में एक–एक गौ रखने का तथा किसी भी हालत में गौ को न बेचने का संकल्प करे तो स्वतः ही वह सुखी हो जायेगी। गोसेवा से अपुत्री पुत्र को, धनहीन व्यक्ति धन को प्राप्त करता है तथा किसी भी कामना से गौ की सेवा करने वाला मनोऽभिलषित फल को प्राप्त करता है। गौ–सेवा से सत्य काम जाबाल आदि को ब्रह्मज्ञान–प्राप्ति की बात प्रसिद्ध ही है।

गौ से हमारा आध्यात्मिक सम्बन्ध भी है। मरने के बाद गौ वैतरणी पार कराती है। इसलिये गौ सदैव पूज्या है। गौ का दूध सात्त्विक है और बुद्धि–बल को बढ़ाने वाला है तथा इसके अलावा सभी जानवरों का दूध रजोगुणी है जो मन–बुद्धि में विकार उत्पन्न करता है। परीक्षा की दृष्टि से देखें तो सैकड़ों गायों के बीच में आपकी गाय बँधी हो तो उस समय अपने गाय के बछड़े को खोल दीजिये, वह बछड़ा सैकड़ों गायों के बीच में भी अपनी माँ को ढूँढ़ लेगा। भैंस का पाड़ा दस भैंसों के बीच में बँधी अपनी माँ को नहीं ढूँढ़ पायेगा। गाय भयंकर गर्मी में भी जंगलों में चरकर आती है। उसे तनिक भी गर्मी नहीं लगती। भैंस माघ के महीने में भी थोड़ी–सी गर्मी पड़ी, उसी वक्त चाहे गंदा पानी–कीचड़ क्यों न हो, उसमें जाकर लोटने लगेगी। इस प्रकार हर दृष्टि से गौ माता पूज्या है। गौ की सेवा से ही सुख–शान्ति प्राप्त हो सकती है।

(साभार : गो सेवा)

सम्पादकीय... (पृष्ठ 1 का शेष...)

नजरों में प्रतिष्ठापित कर दिया है। रक्षा से जुड़ी कम्पनियों के शेयर आसमान छू रहे हैं। अच्छे संसाधन भी प्रयोग में लाने के लिए अच्छे मस्तिष्क की आवश्यकता है। यह ऑपरेशन अच्छे मस्तिष्क के अच्छे संसाधनों के उचित समन्वय का परिणाम है।

बहुत प्रसन्नता अब इस बात की है जहाँ सरकार के कृषि क्षेत्र पर अपना ध्यान लगाया है वहीं अब मेधा भी इस ओर आकृषित हो रही है। कृषि विकास दर जो दशकों तक 1 व 1.5 प्रतिशत रहती थी वह लगभग 3.5 प्रतिशत पर आ गयी है। यह अब लगातार बढ़ने वाली है। 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य में अपना भरपूर योगदान भी देगी। इसी के साथ आपका पुनः अभिवादन!

– आपका अपना

महेश बाबू गुप्ता

(mahesh@mbgupta.com)

अध्यक्ष की कलम से... (पृष्ठ 1 का शेष...)

आप सभी लोगों से अपील है कि आप अपना–अपना भूसा सहयोग जल्द दें, जिससे गौमाता के लिए भूसा दाना भण्डारण किया जा सके।

साथियो आप गौशाला के गो उत्पाद गोनाईल, गोक्लीन, जैविक खाद, गो रस दीपक एवं गोग्रास के लिए श्री राम सहाय (मो. 9718782232) व श्री सत्य राजन (मो. 9891018582) से सम्पर्क कर सकते हैं।

मित्रों इस माह का हवन 1 जून, 2025 दिन रविवार को गौशाला मे रहेगा, आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

मित्रों आपके प्यार एवं सम्मान के लिए पुनः बहुत–बहुत धन्यवाद। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि गौमाता की सेवा में सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके स्नेह एवं सहयोग के लिए पुनः धन्यवाद!

– आपका अपना

विकास अग्रवाल

(vikas18noida@yahoo.com)

कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के संकेत

– प्रह्लाद सबनानी
आर्थिक मामलों के जानकार

भारत में लगभग 60 प्रतिशत आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और अपनी आजीविका के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। जबकि कृषि क्षेत्र का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान केवल 18 प्रतिशत है। इस प्रकार, भारत में यदि गरीबी को जड़ मूल से नष्ट करना है तो कृषि के क्षेत्र में आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू करना ही होगा। भारत आज विश्व में सबसे अधिक तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था भी बन गया है। परंतु इसके आगे की राह अब कठिन है, क्योंकि केवल सेवा क्षेत्र एवं उद्योग क्षेत्र के बल पर और अधिक तेज गति से आगे नहीं बढ़ा जा सकता है और कृषि क्षेत्र में आर्थिक विकास की दर को बढ़ाना होगा।

भारत में हालांकि कृषि क्षेत्र में कई सुधार कार्यक्रम लागू किए गए हैं और भारत आज कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन गया है। परंतु अभी भी बहुत कुछ किए जाने की आवश्यकता है। किसानों के पास पूंजी का अभाव रहता था और वे बहुत ऊंची ब्याज दरों पर महाजनों से ऋण लेते थे एवं उनके जाल में जीवन भर के लिए फंस जाते थे, परंतु आज इस समस्या को बहुत हद तक हल किया जा सका है और किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किसान को आसान नियमों के अंतर्गत बैंकों से ऋण की सुविधा उपलब्ध है। देश के करोड़ों किसान इस सुविधा का उठा रहे हैं।

वहीं, खेती के सामने यदि बड़ी समस्याओं पर गौर करें तों देश में कृषि जोत हेतु पर्याप्त भूमि का अभाव है एवं सीमांत व छोटे किसानों की संख्या करोड़ों में हो गई है। इस कारण ये किसान किसी तरह अपना और परिवार का भरण–पोषण कर पा रहे हैं। इनके लिए कृषि लाभ का माध्यम नहीं रह गया है। इस तरह की समस्याओं के समाधान हेतु केंद्र सरकार अब विभिन्न उत्पादों के लिए मुद्रा स्फीति को ध्यान में रखकर प्रतिवर्ष न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि करती रहती है। इससे किसानों को अत्यधिक लाभ हो रहा है। भंडारण सुविधाओं में पर्याप्त वृद्धि दर्ज हुई है। परिवहन सुविधाओं में सुधार के चलते किसान कृषि उत्पादों को तुलनात्मक रूप से लाभ की दर पर बेचने में सफल हो रहे हैं। आज भारत में उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग पर ध्यान दिया जा रहा है, ताकि उर्वरकों के उपयोग की आवश्यकता कम हो एवं कृषि उत्पादकता बढ़े। इस संदर्भ में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना भी किसानों की मदद कर रही है। इससे किसान कृषि भूमि पर मिट्टी के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर फसल का उत्पादन कर रहे हैं। राष्ट्रीय कृषि बाजार को स्थापित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि किसान सीधे उपभोक्ता को उचित दामों पर अपनी फसल को बेच सके। साथ ही, कृषि फसल बीमा के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि देश में सूखे, अधिक वर्षा, चक्रवात, अतिवृष्टि, अग्नि आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं के चलते प्रभावित हुई फसल के नुकसान से किसानों को बचाया जा सके। आज करोड़ों की संख्या में किसान फसल बीमा योजना का लाभ उठा रहे हैं।

चूंकि हमारे देश में खेती–किसानी का काम वर्षभर नहीं रहता है, इसलिए किसानों के लिए अतिरिक्त आय के साधन निर्मित करने के उद्देश्य से डेयरी, पशुपालन, मधु मक्खी पालन, पोल्ट्री, मत्स्य पालन आदि कृषि सहायक क्षेत्रों पर भी ध्यान दिया जा रहा है। कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था में किसी भी दृष्टि से कृषि क्षेत्र के योगदान को कमतर नहीं आंका जा सकता है, क्योंकि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का विकास भी कृषि क्षेत्र के विकास पर ही निर्भर करता है। अधिकतम उपभोक्ता आज भी ग्रामीण इलाकों में ही निवास कर रहे हैं एवं उद्योग क्षेत्र में निर्मित उत्पादों की मांग भी ग्रामीण इलाकों से ही निकल रही है। अतः देश में कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देना ही होगा।

गौशाला में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

सुश्री गौरिका बंसल जी एवं परिवार द्वारा गोमाता के लिये आयोजित 56 भोग का दृश्य।

वृक्षा रोपण भारत विकास परिषद् स्वर्णिम द्वारा

गौसदन में सहयोग के प्रकार

मासिक हवन (प्रातः 9 बजे)	: रू॰ 3,100/– (मास के प्रथम रविवार को – यजमान सहयोग)
गौग्रास योजना	: रू॰ 500 से 5,000/– तक मासिक
हरा चारा सहयोग	: रू॰ 5,100/–
सवामनी दलिया	: रू॰ 5,100/–
गाय अडॉप्शन योजना	: रू॰ 11,000/– (प्रति गाय) (प्रतिवर्ष – गाय की आयु तक)
गौदान	: रू॰ 31,000/–
छप्पन भोग	: रू॰ 31,000/–
भूसा सहयोग	: रू॰ 1,01,000/– (लगभग 1 ट्रक)
खल, चोकर व छिलका	: रू॰ 1,01,000/–

अपील

वर्तमान में गौशाला में लगभग 1700 से अधिक गोवंश हैं। भूसा/चारे का खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। गोपाष्टमी में जिन बंधुओं ने भूसा दान की घोषणा की थी, उन सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न करें।

श्री जी गोसदन

(पंजीकृत सोसायटी सं.–592, अधिनियम सं.–21, सन् 1860 के अर्न्तगत)

भूखण्ड सं. 7, सैक्टर 94, नौएडा (उ.प्र.)

मो. : 8882425010

ई–मेल : shreejeegausadan94@gmail.com

वेबसाइट : www.shreejeegausadan.com

अध्यक्ष : **सीए विकास अग्रवाल** (मो. : 9810015863)

महासचिव : **श्री सुशील भारद्वाज** (मो. : 7982002929)

कोषाध्यक्ष : **सीएस संजय गुप्ता** (मो. : 9873410688)

प्रबन्धक : **श्री संतोष सिंह** (मो. : 7428350639)

दान/सहयोग राशि हेतु जानकारी :

SHREE JEE GAUSADAN

Account No. : **923010022147753**

Name of Bank : **AXIS BANK**
Sector 44, Noida (U.P.)

IFSC Code : **UTIB0001788**

अथवा **QR** कोड स्कैन करें

PRAVEK

100% शुद्ध और पवित्र

200 मिली के पैक में उपलब्ध

गोजल

पाचन क्रिया सुधार हेतु

आयुर्वेद में गाय के गौमूत्र को एक संजीवनी कहा गया है, जो रोगों को भगाए और दीर्घायु प्रदान करे।

प्रवेक गोजल को आसवन के बाद काँच की बोतल में पैक किया जाता है, ताकि वह सभी अशुद्धियों से मुक्त हो व गोजल के स्वाभाविक रुपी अम्लीय गुणों से बचाता हो।

उपयोग

- कृमि रोग
- कण्डू रोग
- कुष्ठ रोग
- दोष जन्य उदर विकार
- अफारा
- मेदोरोग
- अध्यमान, आदि में लाभकारी

मात्रा

20 मिली प्रवेक गौजल को जल में मिलाकर दिन में एक बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

CUSTOMER CARE
+91 9990990999 | customercare@pravek.com
www.pravek.com